आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2638 • उदयपुर, बुधवार 16 मार्च, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

औरंगाबाद (बिहार) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 20 फरवरी 2022 को आर्यन महाजन नाट्य कला मंच औरंगाबाद में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्रीमान् उदयकुमार जी अध्यक्ष, नगरपरिषद औरगांबाद, बिहार रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 505, कृत्रिम अंग माप 90, कैलिपर्स माप 42, की सेवा हुई तथा 75 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् उदयकुमार जी (अध्यक्ष, नगरपरिषद औरंगाबाद), अध्यक्षता डॉ. महावीर प्रसाद जी जैन (रोटरी क्लब), विशिष्ट अतिथि

श्री डॉ. चन्द्रशेखर जी (रोटरी क्लब), श्री विनोद कुमार जी (अध्यक्ष, विकलांग संघ), श्री गिरजा राम जी (उपाध्यक्ष, विकलांग संघ), डॉ. अंजली जी (बुनयाद केन्द्र, बारुद ब्लॉक) रहे।

डॉ. अमीत कुमार जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. पंकज कुमार जी (पी.एन.डो), श्री नरेश जी वैश्णव (टेक्नीशियन), शिविर टीम में श्री लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी, श्री बहादुर सिंह जी मीणा, श्री सत्यनारायण जी मीणा (सहायक) ने भी सेवायें दी।

गजरोला, जिला अमरोहा (उत्तरप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 20 फरवरी 2022 को जे.बी.एफ मेडिकल सेंटर राम धर्म कांटा के पास, भरतीया ग्राम में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता जे.बी.एफ मेडिकल सेंटर, गजरोला रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 221, कृत्रिम अंग माप 69, कैलिपर्स माप 39, की सेवा हुई तथा 19 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री सुनिल जी दीक्षित (निदेश जन सम्पर्क अधिकारी), अध्यक्षता डॉ. सुजिन्द्र जी

फोगाट (चिकित्सक), विशिष्ट अतिथि श्री डॉ. नितिन जी (चिकित्सक), श्री अजय कुमार जी (सेवा प्रेरक), श्रीमती आरती जी (समाज सेविका) रहे। नेहा जी (पी.एन.डो), श्री किशन जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री बजरंग जी, श्री गोपाल जी (सहायक) ने भी सेवायें दी।

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में कराये निर्माण

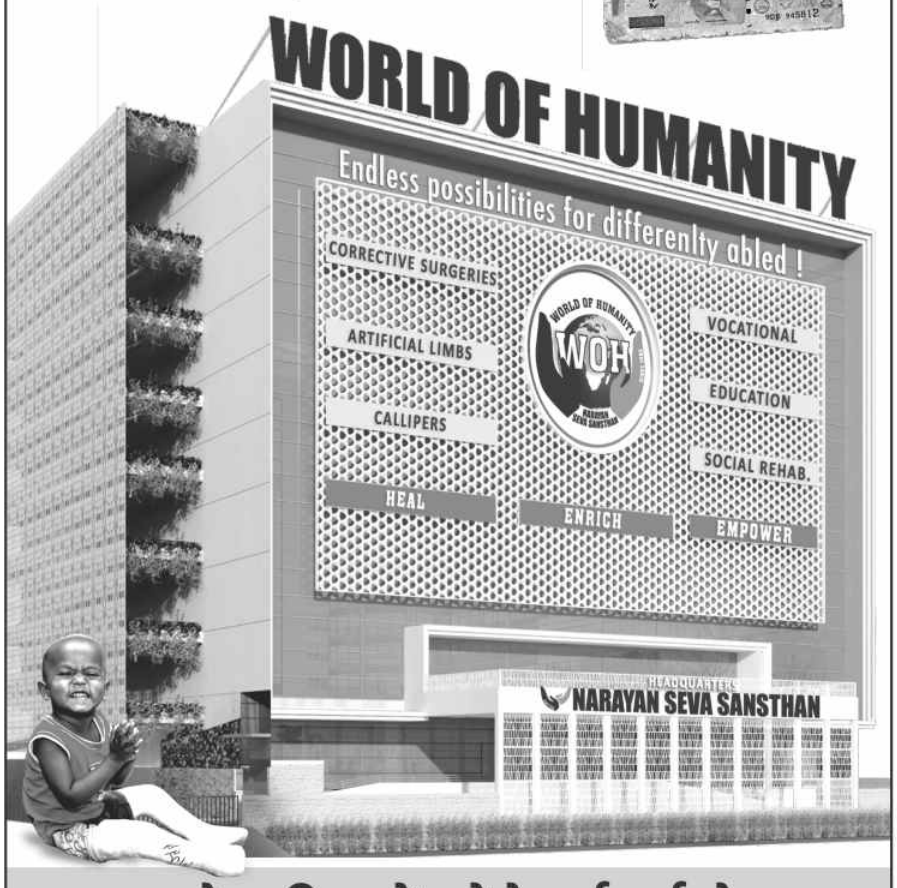

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष
* 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल * 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त* निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी * भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट * प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण
अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
SINCE 1985

स्नेह मिलन समारोह
दिनांक व स्थान
समय : सायं 4.00 बजे से
20 मार्च 2022 : होटल जयपुर हेरिटेज, बद्रीनारायण मंदिर के पीछे, आमेर रोड़, जयपुर, राज.
20 मार्च 2022 : प्रशान्ति विद्या मंदिर, महावीर नगर 2, खण्डेलवाल नर्सिंग होम के पीछे, कोटा, राज.
20 मार्च 2022 : बी राधिका भवन, राम वाटिका सोसाईटी, स्वामी नारायण नगर, बडोदा, गुजरात
इसस्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त श्रीया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

मुसीबत से डरकर भागो मत, उसका सामना करो

एक बार बनारस में स्वामी विवेकानन्द जी मां दुर्गा जी के मंदिर से निकल रहे थे कि तभी वहां मौजूद बहुत सारे बंदरों ने उन्हें घेर लिया। वे उनसे प्रसाद छीनने लगे वे उनके नजदीक आने लगे और डराने भी लगे। स्वामी जी बहुत भयभीत हो गए और खुद को बचाने के लिए दौड़ कर भागने लगे। वो बन्दर तो मानो पीछे ही पड़ गए और वे भी उन्हें पीछे पीछे दौड़ने लगे। पास खड़े एक वृद्ध संन्यासी ये सब देख रहे थे, उन्होनें स्वामी जी को रोका और कहा– रुको! डरो मत, उनका सामना करो और देखो क्या होता है? वृद्ध सन्यासी की ये बात सुनकर स्वामी जी तुरंत पलटे और बंदरों की तरफ बढने लगे। उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब उनके ऐसा करते ही सभी बन्दर तुरंत भाग गए। उन्होनें वृद्ध सन्यासी को इस सलाह के लिए बहुत धन्यवाद किया। इस घटना से स्वामी जी को एक गंभीर सीख मिली और कई सालों बाद उन्होंने एक संबोधन में इसका जिक्र भी किया और कहा– यदि तुम कभी किसी चीज से भयभीत हो, तो उससे भागो मत, पलटो और सामना करो। वाकई, यदि हम भी अपने जीवन में आये समस्याओं का सामना करें और उससे भागें नहीं तो बहुत सी समस्याओं का समाधान हो जायेगा!

भगवान अच्छा ही करते हैं

एक राजा अपने मंत्री के साथ आखेट पर निकले। वन में हिरन को देख राजा ने तीर प्रत्यंचा पर चढ़ाया ही था कि जंगल में से एक सुअर निकला और राजा को धक्का देकर भागा। इस अप्रत्याशित आघात के कारण तीर की नोंक से उनकी उँगली कट गई। रक्त बहने लगा और राजा व्याकुल हो उठे। मंत्री की ओर देखने पर मंत्री बोले–"राजन ! भगवान जो करता है, अच्छे के लिए करता है।" राजा पीड़ा में थे ही, मंत्री की बात सुन क्रोध से भर उठे। उनहोने मंत्री का आज्ञा दी कि वो उसी समय उनका साथ छोड़कर अन्य राह पकड़ लें। मंत्री ने आदेश को सहर्ष स्वीकार किया और भिनन दिशा में निकल पड़े। इधर राजा थोड़ा आगे बढ़े ही थे कि उन्हें नरभक्षियों ने घेर लिया। वे उन्हें पकड़कर अपने सरदार के पास लें चले। राजा को बलि देने की तैयारी हो रही थी कि उनके पुजारी ने राजा की कटी उंगली देखी तो कहा–"इसका तो अंग भंग है, इसकि बलि स्वीकार नहीं हो सकती।" राजा को जीवनदान मिला तो उन्हें मंत्री की बात याद आई। सोचने लगे कि मंत्री ठीक कहते थे– भगवान जो करता है, अच्छे के लिए ही करता हैं। मुझे उनका साथ नहीं छोड़ना चाहिए था। ऐसा सोचते ही वे आगे बढ़ रहे थे कि उन्हें मंत्री नदी किनारे भजन करते दिखाई पड़ें राजा ने प्रेमपूर्वक मंत्री को गले लगाया और उन्हें सारा घटनाक्रम कह सुनाया। तदुपरांत राजा ने उनसे प्रश्न किया–"मेरी उंगली कटी, इसमें भगवान ने मेरा भला किया, पर तुम्हें मैंने अपमानित करके भगाया, इससे भला तुम्हारा क्या भला हुआ?" मंत्री मुसकराए और बोले– "राजन! यदि आपने मुझे भिन्न राह पर न भेजा होता और मैं आपके साथ होता तो अंग भंग के कारण नरभक्षी आपकी बलि न देते, पर मेरी बलि चढ़नी सुनिश्चित थी। इसलिए भगवान जो करते हैं, अच्छा ही करते हैं।"

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

भगवान श्रीराम ने कहा – भरत तुम बोलो। तुम बोलोगे , मैं कर लूंगा। लेकिन पिताजी ने आज्ञा दी थी चौदह साल में वनवास रहूँ। तुम कहोगे तो, रोओ मत। तुम्हारे आँखों के आँसूं नहीं देख सकता।

हर आँख यहाँ यूं तो बहुत रोती है,
हर बूंद मगर अश्क तो नहीं होती है।
देखकर जो रो दे जमाने का गम,
गिरे उस आँख से आँसू वो मोती है।।

राम ने कहा – भरत आँख के आँसू पौछ लीजिये। अपने उत्तरीय से, अपने दुपट्टे से भरत की आँखों के आँसू। बोल भाई बोल। तूं कहेगा जो कर लूंगा, तूं धर्ममय है। भरतजी ने सोचा– अब तो मेरे को कह दिया। तुम कहोगे जो कर लूंगा। भरतजी के मन में हजारों प्रकार के प्रश्न– उत्तर आने लगे। हम तीनों भाई वन को चले जावे। रामजी और भाभीजी सीताजी अयोध्या लौट आवे। मैं और शत्रुधन को वन को चले जावे। राम , लक्ष्मण अयोध्या लौट जावें। सोचा – अब तो सब भार मेरे पर ही रख दिया। और कैकेयी फिर बीच में बोली – मैंने ही वरदान लिये थे। मैं वरदान को वापिस लेती हूँ।

लौट चलो घर भैया
अपराधिन मैं हूँ तात तुम्हारी मैया।
राम भगवान ने कहा।
पहले वो आदेश प्रथम हो पूरा
कि जिनके लिये प्राण उन्होंने त्यागे
मैं भी अपना व्रत नियम निभाँऊ आगे।

भरत कहेगा वो कर लेंगे। भरतजी मौन हो गये। सीताजी अपनी माताजी से मिलने गयी है। सुनयनाजी ने कंठ से लगा लिया। और अमर हो गयी वो वाणी। जो उन्होंने कभी कहा था– पुत्री पवित्र किये कुल दोऊँ। है जानकी, है वैदेही, है सीते तुमने तुम्हारे पीहर के कुल को, जनकजी के कुल को भी पवित्र कर दिया। हमारी ऐसी बेटी चाहती तो पीहर आ सकती थी। चाहती तो अयोध्या में रह सकती थी– मैं जनकपुरी जाऊंगी। मैं अपने माता–पिता के पास चौदह साल रहूंगी। जब राम भगवान अयोध्या से लोटेंगे तो मैं भी वापिस आ जाऊंगी, लेकिन नहीं कहा। यही कहा।

सुख में आ आ के रहू
संकट में कैसे मुँह फेरू
देखेगा तो कोन किसे
मरना होगा मौन जिसे।

और भरत जी, भरत जी जैसे राम भगवान को ढूंढने आये। सीता माता तो राम भगवान के साथ ही पधार गयी। सुनयनाजी ने गले से लगा लिया।

पीड़ित की सेवा का सुख

एक बार पण्डित मदनमोहन मालवीय किसी आवश्यक कार्य से बग्घी में बैठ कर कहीं जा रहे थे, तो उन्होंने सड़क के किनारे किसी महिला के कराहने की आवाज सुनी। उन्होंने बग्घी रुकवाई और उतरकर देखा कि उस महिला के शरीर से खून बह रहा है और असह्य वेदना से वह कराह रही है। एक नन्हा–सा बच्चा भी उसकी गोद में है। बहुत–से लोग उधर से गुजरे, पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। मालवीयजी ने उसे उठाकर बग्घी में बैठाया और अस्पताल पहुँचे। वे तब तक अस्पताल में रहे, जब तक कि उस महिला के समुचित उपचार की सारी व्यवस्था नहीं हो गई। उन्होंने जाने से पहले उपचार हेतु महिला को कुछ रुपये भी दिये और डाक्टरों से उसकी समुचित देखभाल करने की प्रार्थना की। मालवीयजी पीड़ित की सेवा के सुख को भली–भाँति जानते थे।

सम्पादकीय

सेवा शब्द की व्युत्पत्ति से ही इसमें विविध अर्थों का समावेश रहा है। जीव जब परमात्मा के समीप बैठने का उपक्रम करता है तो वह भी सेवा है। भक्त जब भगवान के विग्रह की सर्वभांति चिंता करते हुए उनके दैनिक चर्या का कार्य करता है तो वह भी सेवा है। अपने शब्दों को वंदन के बोलों से लबरेज करके अर्चना, पूजा करता है तो वह भी सेवा है, अपने माता–पिता, गुरुजन या अन्य वरिष्ठों की भाुश्रूषा पालन, करता है तो वह भी सेवा है। मनुष्य प्रत्येक जीव में ही परमात्मा का अंश देखकर उसकी सहायता करता है तो वह भी सेवा ही है। ये सब सेवा के विविध एवं दिखाई देने वाले स्वरूप हैं। सेवा हर हाल में श्रेष्ठ है। पर यहाँ यह रेखांकित करना प्रासंगिक है कि सेवा प्रचलन से भी होती है और स्वभाव से भी। प्रचलन की सेवा से भी कोई परहेज नहीं है पर उससे सेवा करने वाले का मन निर्मल होगा यह कहना कठिन है। किन्तु जो सेवा स्वभावतः होती है उसमें सेवा करने वाले को जो रस आएगा, वही शायद किन्हीं और अर्थों में परमानंद होता है। परमात्मा से यही कामना है कि सेवा हम सबका स्वभाव बन जाए।

कुछ काव्यमय

सेवा–धर्म महान है, अति प्राचीन विचार।
सेवारत इन्सान ही, समझा जीवन सार।।
आत्मीय सेवा काज से, होते निर्मल भाव।
चित्त सरल कोमल बने, सुधरे स्वयं सुभाव।।
सेवा को साकार कर, सुखी करें संसार।
मन में प्रतिदिन लहलहे,सेवा का संचार।।
आर्त्त स्वरों को दे सकें, राहत के दो बोल।
मिल जाएगा हे प्रभो, सांसों का सब मोल।।
पीड़ित जन की शुश्रूषा, कहाँ हमारा भाग।
सेवा जल से धुल रहे, जीवन भर के दाग।।

सदुपयोग कैसे करें

बहुत लोग ऐसे हैं ....जो सोचते हैं, उनकी आवश्यकताओं की कोई सीमा नहीं.... जो पास में है, उसका दुगुना चाहिए..... दुगुने का चौगुना चाहिए...और इस तरह चाह अनन्त बढ़ती ही जाती है।

दूसरी तरफ वे लोग हैं... उनकी भी चाहत है..... उन्हें भी मिलता है, पर .उनके पास कुछ भी टिकता ही नहीं...

वे तो अपना सब कुछ असहाय, निर्धन, दिव्यांग, वृद्धजनों की सेवा के लिए.... अपना सब कुछ देने को सदैव तत्पर रहते हैं.....उन्हें न नाम का मोह है.... न यश की लिप्सा है.... और न ही अपनी अहंता का दूसरों पर बलात् आरोपण...उन्हें केवल प्राणिमात्र की भलाई ही प्रिय है.... दूसरों के दुःखों का निवारण ही उनकी साधना है.... पूजा है.... ध्यान है। ....वे विरले ही हैं.... वे साधु हैं. भावनाओं के इस खेल के पीछे प्रभु की बहुत बड़ी शक्ति काम कर रही है.. .. प्रभु उन्हें भी दे रहा है..... जो केवल

संग्रह करना जानते हैं, न स्वयं उपयोग–उपभोग करते हैं.... न दूसरों की सेवा सहायता के लिए दान करते हैं.... उनका धन तो बस ....नाश की प्रतीक्षा में संग्रह किया पड़ा रहता है.... इसके विपरीत प्रभु उन्हें भी प्रभूत मात्रा में दे रहा है.... जो अपने पास संग्रह नहीं करके निर्धन, असहाय, दिव्यांग भाई– बहीनों व बच्चों को अपने पैरों पर खड़ा करने में अपने धन का दान कर देते हैं.... दोनों को मिल रहा है..... पर यह रहता यहीं का यहीं है..... एक स्थान पर अनुपयोगी होकर निरर्थक पड़ा रहता हैं.... तो दूसरे स्थान पर सतत भ्रमण करता हुआ.....अनेक हाथ–पैरों की सहायता करता हुआ निरन्तर गतिमान.... वृद्धि को प्राप्त करता है...ये हैं दो परिदृश्य.. ... प्रभु द्वारा उपलब्ध करवाई गई सम्पत्ति और वैभव के .....प्रभु की कृपा से प्राप्त हमारी सम्पत्ति का उपयोग– अनुपयोग, सदुपयोग– दुरूपयोग करना हमारे संस्कार, संकल्प और विवेक पर निर्भर करता है.... सब कुछ ब्रह्माण्ड में विहित है... . सब कुछ ब्रह्माण्ड में ही विलीन होता है... अतः हम निरन्तर प्रार्थना करें सद्भाव और सेवा की ....हम ब्रह्माण्ड से अवश्य मांगे, कोमल– करुणामय भावनाओं का विस्तार, उनकी प्राप्ति पर पूरा यकीन, भरोसा तथा विश्वास.... और आप हम देखेंगे कि हमें वह सब प्राप्त हो रहा है...जो हमने चाहा है..... जो हमने मांगा है, प्राणिमात्र की सेवा के लिए... मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा धर्म होता है।

– कैलाश 'मानव'

प्रशंसा का जादू

प्रशंसा का कोई मोल नहीं होता, प्रशंसा करने से कुछ नहीं जाता मगर पाने वाले को अपना बना देती है।

हमारे भीतर अगर धन्यवाद का भाव आ जाए तो जीवन सुखमय हो जाएगा। हर अच्छाई की प्रशंसा करके लोगों के दिलों को जीता जा सकता है। एक परिवार में पति–पत्नी और बच्चा बड़े प्यार से रहते थे। पति और पत्नी दोनों जॉब करते थे। गृहस्थी आराम से चल रही थी। एक दिन की बात है कि पत्नी थकी–मांदी ऑफिस से लौटी, उसने जैसे–तैसे भोजन बनाया और रख दिया।

देर शाम पति घर लौटा। उसने उस भोजन को प्रेम से खा लिया, परन्तु उसे

बेटे को भोजन नहीं भाया। बेटे ने रात को सोते समय पिता से पूछा पापा! आज भोजन कच्चा था, फिर भी आपने खा लिया। मम्मी को कुछ नहीं बोला। तब पिता ने प्यार से बेटे के सिरपर हाथ फिराते हुए .कहा–आपी मम्मी रोजाना अच्छा भोजन बनाती है, आज उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। इसीलिए अच्छा भोजन नहीं बना पाई, कोई बात नहीं। मैंने कुछ नहीं कहकर घर में अशांति को रोक लिया। बेटा पिता से एक अच्छी बात सीख गया। लेकिन दूसरी कहानी में एक पत्नी ने पति की थाली में घास–फूस, कंकर–पत्थर ढककर परोस दिया। पति ने भोजन के लिए ऊपर की थाली हटाई तो घास–फूस देखकर आग–बबूला हो गया और जोर–जोर से कहने लगा कि मुझे तुमने जानवर समझा है क्या?

पत्नी पलटकर जवाब देती है– पतिदेव! आज शादी को 5 वर्ष हो गए, मैंने अच्छे–अच्छे व्यंजन बनाकर आपको परोसे, परन्तु आपने भी अच्छा या बुरा, कुछ भी नहीं कहा। मुझे लगा कि आप जानवर ही हैं जो अच्छे को अच्छा कहना नहीं जानते। यह सुनकर पति ने सीख ली कि मुझे उसे अच्छाई भी बताना चाहिए थी, ताकि वह हमेशा खुश रहती।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

तब गायत्री तपोभूमि, मथुरा में सद्वाक्यों का एक सेट मिलता था जिसका मूल्य 50 रु. था। कैलाश ने इस राशि का मनी आर्डर उन्हें भेज कर एक सेट मंगवा लिया। यह सद्वाक्य पतले कागज पर छपे होते थे जिन्हें गत्तों पर चिपकाया जा सकता था। सेट में 300 पन्ने आ गये थे। कैलाश ने गत्ते एकत्र किये और घर पर ही जौ की लई बना ली। गत्तों पर सद्वाक्य चिपका सार्वजनिक स्थानों पर टांगने, कीली से ठोकने लगा। उसकी इच्छा मंदिर में भी लगाने की थी, पुजारी से पूछा तो उसने कहा आप दे जाओ, हम लगा देंगे। कैलाश उन्हें कुछ गत्ते दे आया फिर भी कई दिनों तक पुजारी ने ये कहीं नहीं लगाये। कैलाश को बहुत दुख हुआ, वह एक दिन मन्दिर गया और पुजारी से सब गत्ते लेकर अपने हाथों से ही मन्दिर में चारों तरफ लगा दिये।

कैलाश को इस कार्य से बहुत प्रसन्नता की अनुभूति होने लगी। जब लोगों पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ता देखा तो उसका उत्साह और बढ गया। मन्दिर के साथ ही पाली के अस्पताल में भी ये बोर्ड लगाये। एक दिन कुछ बोर्ड और लगाने वह अस्पताल गया तो एक बिस्तर पर लेटे 50 साल के व्यक्ति ने उसे अपन पास बुलाया और पूछा –ये बोर्ड आपने लगाये हैं ? व्यक्ति के हाथ में प्लास्टर बंधा था और उसके सामने ही एक बोर्ड लगा था। कैलाश ने हामी भरी तो अपने सामने लगे बोर्ड की तरफ इशारा करते हुए उसने कहा–रात को इस बोर्ड को मैंने 100 बार पढा होगा।

कैलाश को व्यक्ति की बात अच्छी लगी फिर भी हँसी में कह दिया–रात को नींद नहीं आई होगी इसीलिये पढते रहे। मरीज ने कैलाश की बात का बुरा नहीं माना और कहा – मैंने इस बोर्ड को पढा ही नहीं वरन् इसे पढ कर अपना जीवन बदलने का निश्चय कर लिया है। कैलाश की इस व्यक्ति में उत्सुकता बढ गई। वह पूछ बैठा – आप करते क्या हैं ? वो बोला – ठेकेदार हूँ, मैंने मजदूरों का बहुत हक मारा है, पैसा समय पर नहीं देता, कम देता।

अंश - 035

भगवान के रूप

एक समय मोची का काम करने वाले व्यक्ति को रात में भगवान ने सपना दिया और कहा कि कल सुबह मैं तुझसे मिलने तेरी दुकान पर आऊंगा । मोची की दुकान काफी छोटी थी और उसकी आमदनी भी काफी सीमित थी।

खाना खाने के बर्तन भी थोडे से थे। इसके बावजुद वह अपनी जिंदगी से खुश रहता था। एक सच्चा ईमानदार और परोपकार करने वाल इंसान था। इसलिए ईश्वर ने उसकी परीक्षा लेने का निर्णय लिया। मोची ने सुबह उठते ही तैयारी शुरू कर दी।

भगवान को चाय पिलाने के लिए दुध चायपती और नाश्ते के लिए मिठाई ले आया। दुकान को साफकर वह भगवान का इंतजार करने लगा। उस दिन सुबह से भारी बारिश ही रही थी। थोडी देर में उसने देखा कि एक सफाई करने वाली बारिश के पानी में भीगकर ठिठूर रही है। मोची को उसके ऊपर बड़ी दया आई और भगवान के लिए लाए गये दूध से उसको चाय बनाकर पिलाई। दिन गुजरने लगा ।

दोपहर बारह बजे एक महिला बच्चे को लेकर आई और कहा कि मेरा बच्चा भूखा है। इसलिए पीने के लिए दूध चाहिए। मोची ने सारा दूध उस बच्चे को पीने के लिए दे दिया । इस तरह से शाम के चार बज गए।

मोची दिन भर बड़ी बेसब्री से भगवान का इंतजार करता रहा । तभी एक बुढ़ा आदमी जो चलने से लाचार था आया और कहा कि मैं भूखा हूँ और अगर कुछ खाने को मिल जाए तो बड़ी मेहरबानी होगी। मोची ने उसकी बेब्रसी को समझते हुए मिठाई उसको दे दी। इस प्रकार दिन बीत गया और रात हो गई रात होती मोची के सब्र का बांध टूट गया और वह भगवान को उलाहना देते हुए बोला कि वाह रे भगवान सुबह से रात कर दी मैंने तेरे इंतजार में । लेकिन तू वादा करने के बाद भी नहीं आया या मैं गरीब ही तुझे बेवफूफ बनाने के लिए मिला था। तभी आकाशवाणी हुई और भगवान ने कहा कि मैं आज तेरे पास एक बार नहीं तीन बार आया और तीनों बार तेरी सेवाओं से बहुत खुश हुआ और तूं मेरी परीक्षा में भी पास हुआ है। क्योंकि तेरे मन में परोपकार और त्याग का भाव सामान्य मानव की सीमाओं से परें है।

भगवान ना जाने किस रूप में हमसे मिल ले हम नहीं जान पाते हैं। अतः अच्छे कर्म करते रहे।

नीम की पत्तियों से उपचार

पेट में कीड़े होने पर नीम की नई और ताजा पत्तियों का उपयोग करना चाहिए। नीम की पत्तियां पेड़ अनेक रोगों में फायदेमंद माना गया है। रोजाना नीम की चार–पांच कोमल पत्तियां चबाकर खाने से खून साफ होता है और कई बीमारियों से बचाव होता है।

1. चेचक का इंफेक्शन होने पर नीम के पत्तों को पानी में उबालकर नहाने से लाभ होता है।
2. फोड़े–फुंसियों पर भी नीम के पत्तों का लेप लगाने से फायदा होता है।
3. नीम के पत्तों को पीसकर इसकी गोली सुबह–शाम शहद के साथ लेने से खून साफ होता।
4. डायबिटीज के रोगी को नीम के पत्तों का रस पीने से लाभ होता है।
5. पेट में कीड़े होने पर नीम की नई व ताजा पत्तियों के रस में शहद मिलाकर चाटें।
6. दमे के मरीज को नीम के तेल की 20–25 बूंदे पान में डालकर खाने से राहत मिलती है।
7. नीम की सूखी पत्तियों का धुआं करने से घर में मौजूद बैक्टरिया नष्ट होते हैं।
8. शरीर पर होने वाली खुजली, खाज और सोरायसिस में राहत के लिए नीम के पतों को उबालकर उससे नहाएं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

क्या भूलूँ क्या याद करूं

इस अवतरण को जब भी लिखने बैठती हूँ तो बस एक चेहरा सामने आ जाता है, ... कैलाश 'मानव' का..... इतनी घटनाएं जुड़ी हैं या यों कहिए 'मानव' इतने जुनून से जुड़े हैं संस्था के साथ, या यों कहिए संस्था जुड़ी है उनसे जुनून के साथ ....कुछ भी कहिए परन्तु "नारायण सेवा संस्थान" एक जुनून का नाम है, एक नशे का नाम है। वह नशा जो श्री 'मानव' के सिर चढ़ कर बोलता है, "सेवा का नशा" और सच ही है जब इतना दर्द हो दिल में दुखियों के लिए, इतनी पीड़ा हो कि दर्द उसे हो और आँसू श्री मानव के निकलें..... तभी तो हो पाता है, इतने वृहद रूप से सेवा का काम इतने विकलांगों का निःशुल्क ऑपरेशन व अन्य कई–कई सेवा कार्य..... एक अकेला इन्सान स्वयं बहुत कुछ करना चाहता है, परन्तु एक सहयोगी समाज की आवश्यकता होती है उस बहुत कुछ की पूर्ति के लिए..... श्री "मानव" ने हम सभी के दिलों में गहरे सेवा के जज्बात जो दबे हुए थे उन्हें बाहर निकाला है और निश्चित ही उन्हीं कोमल जज्बातों ने इतने बड़े रूप में सेवा कार्य करवाए..... श्री मानव संस्थान के कार्य की वजह से बहुत व्यस्त रहते हैं। कभी–कभी अपने व नजदीकी लोगों से लम्बी बात करने का वक्त नहीं निकाल पाते परन्तु मैंने देखा कि हर पीड़ित को वे गले लगाकर मिलते हैं उसकी बात सुनते हैं और उस समय हर सम्भव जो मदद हो सकती है, करते हैं। कभी–कभी तो अपना पूरा पर्स ही खाली कर देते हैं, अगर कुछ खा रहे तो सभी को बांट देते हैं, उनके रोम–रोम में बसी है करूणा, दया, प्रेम.....सोते वक्त रात में जब भी नींद खुल जाएगी बस उसी वक्त उठकर संस्थान के कार्य करना शुरू..... किसी से भी बात किसी अन्य टॉपिक पर करेंगे पर कुछ ही क्षणों बाद आ जाएंगे नारायण सेवा की बातों पर..... मुझे तो लगता है उनकी हर सांस नारायण सेवा का नाम जरूर लेती है..... अद्भुत व्यक्तित्व हैं, बहुत अद्भुत..... बहुत कुछ है आपसे कहने को श्री "मानव" के बारे में, उनकी सेवा के बारे में, उनके जुनून के बारे में....

– कल्पना गोयल

अनुभव अमृतम्

साथीड़ा भी आ गया, प्रशांत भैया उस समय पन्द्रह साल का, कल्पना जी अठारह साल की और कमला जी जिन्होंने बहुत सहयोग दिया, जैसे कहा वो किया। अनन्त सहयोग, कैसे काम हो गया? कैसे परमात्मा ने करवा दिया? जैसे हनुमान जी संजीवनी बूटी ले आये, लेकिन परमात्मा आपकी कृपा से ला पाया। आपने आशीर्वाद दिया था।

हनुमान जी संजीवनी बूटी लेकर आ रहे थे, उस समय भरत जी ने सोचा कोई जा रहा है लम्बा–चौड़ा, कहीं अयोध्या को नुकसान नहीं पहुँचा दे। बिना फल का एक तीर लगाया। कहा माण्डवी ने बढ़कर,

अब आतुरता ठीक नहीं।
संजीवनी महाऔषध की,
क्यों न हो परीक्षा नाथ यहीं।

जब भरत जी ने कहा मैं भरत हूँ, यह शत्रुघ्न है। हम सब श्रीराम के अनुचारी है। तुम हो कौन? यहाँ कैसे हो? परमात्मा, बजरंग बली की कृपा से ही ये शिविर, ये वस्त्र, ये कम्बल, ये पौष्टिक आहार, ये दवाइयाँ, चालीस–चालीस महानुभाव का ये सेवा दल, आपकी कृपा से ही सम्भव हो पाया। आत्मा सो परमात्मा बहुत कुछ घटित होता चला गया।

कैलाश अग्रवाल केवल उस धारा में बह रहा है। कहते हैं कैलाश ने किया, कैसे किया? कैलाश के अन्दर कोई गाँठ हो जाये तो उसके अन्दर इतनी क्षमता नहीं कि वो उसको निकाल सके। बुखार को बिना दवाई से मिटा नहीं सकता, जुकाम हो जाये तो कैसी छींके आती? कैसे खाँसी आती?

यदि सर्व शक्तिमान इंसान होता तो कभी बीमार नहीं पड़ता। सर्व शक्तिमान नहीं है, कर्म करने में स्वतंन्त्र है। कर्म प्रधान विश्वरचि राखा,

जो जस करहिं,
सो तस फल चाखा।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 388 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com•आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023